By:- Sunita Kumari
Dept. of History
J.N.C. Madhubani

उत्तरवैदिक सभ्यता की प्रमुख विशेषता:
(The main features of Later vedic civilization)

1100 ई० पूर्व में ऋग्वैदिक काल की सभ्यता समाप्त हो गई। उसके बाद की सभ्यता को उत्तर वैदिक काल की सभ्यता के नाम से पुकारा जाता है। अधिकांश इतिहासकारों ने इस सभ्य सभ्यता का समय लगभग 1000 ई० पूर्व से 600 ई० पूर्व माना है। यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक, उपनिषद आदि ग्रंथों से हमें उत्तर वैदिक काल की सभ्यता के बारे में जानकारी मिलती है। उत्तर वैदिक काल में आर्यों के सामाजिक धार्मिक, आर्थिक तथा राजनीतिक जीवन में काफी परिवर्तन हुआ। यह ऋग्वैदिक सभ्यता से काफी भिन्न थी।

—। आर्यों का भौगोलिक एवं राजनीतिक विस्तार:-

उत्तर वैदिक काल में आर्यों ने पूर्व तथा दक्षिण की ओर विस्तार करना शुरू कर दिया था। गंगा-यमुना के दोआब का क्षेत्र आर्यों की सभ्यता का केन्द्रीय स्थान बन गया था। मध्य प्रदेश में कुरु तथा पांचाल आर्यों के दो प्रमुख राज्य थे। पूर्व में कौशल काशी और विदेह आर्यों के नए केन्द्र बन चुके थे। उत्तर वैदिक साहित्य में काशी, कौशल, विदेह, मगध, बंग प्रदेश के राज्यों का उल्लेख किया गया है जिससे ज्ञात होता है कि मगध एवं बंगाल तक सम्पूर्ण उत्तरी भारत के क्षेत्र से आर्य लोग परिचित हो चुके थे। दक्षिण में विन्ध्याचल को पार कर गोदावरी नदी के प्रदेशों में बस गये थे। इस प्रकार आर्य लोग दक्षिण के राज्य क्रमशः से परिचित हो गये थे। दक्षिण में विदर्भ तक आर्यों का विस्तार हो चुका था।

सामाजिक जीवन:-

उत्तरवैदिक काल के आर्यों के सामाजिक जीवन में बहुत परिवर्तन आ गये थे जिनमे निम्नलिखित प्रमुख हैं:-

*1. वर्ण व्यवस्था में जटिलता:- उत्तरवैदिक काल की वर्ण-व्यवस्था में अत्यधिक जटिलता आ गई थी। ऋग्वैदिक वर्ण व्यवस्था ने अब जाति प्रथा का रूप धारण कर लिया था। वर्ण- व्यवस्था के निर्णय में व्यवसाय का स्थान जन्म ले लिया। अब जन्म के आधार पर यह तय किया जाता था कि लोग किस वर्ण के हैं। अब ऋग्वैदिक काल की चार जातियों के अलावा दो और जातियाँ बन गई थी- एक थी निषाद और दूसरी व्रात्य- निषाद। ये लोग शायद भील जाति के थे। तरह-तरह के व्यवसाय पर अब वैश्यो में- लोहार, मोची, और बढ़ई आदि की उप-जातियाँ बन गयी थी।

*2. अस्पृश्यता का प्रादुर्भाव:- जाति प्रथा के बन्धन के अधिक जटिल हो जाने के कारण लोग रक्त की पवित्रता तथा शुद्धता पर अधिक ध्यान देने लगे। छुआ- छूत की भावना लोगों में जागृत हो गयी। उच्च वर्ग के लोग निम्न वर्ग तथा शूद्रों के साथ खान-पान तथा रहन-सहन नही करते थे। वे लोग उन्हें अस्पृश्य समझते थे।

*3. आश्रम व्यवस्था की दृढ़ता:- उत्तरवैदिक काल की आर्थिक व्यवस्था में काफी दृढ़ता आ गयी थी। ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम और सन्यास आश्रम में सुदृढ़ता आ गयी थी। उच्च वर्ण वालो को आवश्यक रूप से सबों का पालन करना पड़ता था लेकिन निम्न वर्णों वालों के लिए कोई बन्धन नही था।

*4. नगरों का प्रादुर्भाव :- ऋग्वेद के आर्य मुख्य रूप से गाँवों में निवास करते थे नगरों में नहीं नगर शब्द का तो कहीं वर्णन भी नहीं मिलता है। परन्तु उत्तरवैदिक काल के आर्य तो मुख्य रूप से नगर में ही निवास करते थे। गंगा-यमुना के किनारों पर बड़े-बड़े नगरों का निर्माण कराया गया था। अतः इस युग में यही नगर राजनैतिक तथा सामाजिक जीवन का केन्द्र बन गये थे।

*5. आहार-विहार :- उत्तरवैदिककाल के आर्यों के आहार-विहार में कोई विशेष अन्तर नहीं हुआ करता था। लेकिन लोगों के भोजन में थोड़ा-बहुत परिवर्तन अवश्य हुआ करता था। माँस-भक्षण तथा सुरापान घृणित समझे जाने लगा था। अथर्ववेद में तो इसका त्यवहार महापाप समझा जाने लगा। खासतौर ब्राह्मण लोग तो इसे छूते तक नहीं थे। अहिंसा के सिद्धांत का इस काल में बीजारोपण हो गया था। गौहत्या का निषेध शुरू हो गया था। दूध, दही, तथा घी के साथ कई तरह के अन्नों को मिलाकर कई प्रकार के खाने योग्य चीजें बनायी जाती थी।

*6. औरतों की दशा में परिवर्तन :- उत्तरवैदिक काल में औरतों की दशा पहले की तरह अच्छी नहीं थी क्योंकि धनी परिवारों में बहु-विवाह प्रथा चल पड़ी थी। फलतः औरतों का जीवन दुःखमय और कष्टपूर्ण हो गया था। कन्या के जन्म पर लोग दुःखी होने लग गये थे। इसके बावजूद औरतों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता था। गार्गी और मैत्रेयी आदि कन्याओं के नाम विशिष्ट रूप से उल्लेखनीय हैं क्योंकि वे विदुषी कन्या थी जो शास्त्रार्थ वाद-विवादों में पूर्ण सफल रूप से भाग लिया करती थी।

classmate

Date ______
Page (4)

*7. विवाह प्रथा :- उत्तर वैदिक काल में औरतों की दशा पहले से अधिक बिगड़ गई थी क्योंकि इस काल में विवाह संबंधी नियम अधिक कठोर हो गये थे। दहेज लेने और देने की प्रथा थी। विवाह को आध्यात्मिक महत्व प्राप्त था इसमें स्वयं देवता आकर भाग लेते थे ऐसे लोगों का विश्वास था। भिन्न गोत्र में विवाह करना ही अधिक अच्छा समझा जाने लगा। विधवा विवाह भी होता था। विधवा विवाह के साथ बहु-विवाह भी होता था क्योंकि मनु की दस पत्नियाँ थी। उच्च वर्ण की कन्या का विवाह उच्च वर्ण के लड़के के साथ होता था निम्न वर्ण के लड़के से नहीं; कन्याओं का विक्रय भी होता था उस समय सौतों के आपसी झगड़े भी खूब हुआ करते थे।

—— : आर्थिक जीवन :-

*1. भूमिपतियों का प्रादुर्भाव :- ऋग्वैदिक काल में भूमिपतियों का कहीं नामोनिशान भी नहीं था लेकिन अब बड़े-बड़े भूमिपतियों का प्रादुर्भाव होने लगा था।

2 वाणिज्य तथा व्यापार में उन्नति :- उत्तरवैदिक काल में व्यापार और वाणिज्य में अत्याधिक उन्नति हो गयी थी क्योंकि वे लोग उपजाऊ मैदान में निवास करने लगे थे। धनी व्यापारी श्रेष्ठिन के नाम से पुकारे जाते थे। कपड़ा तथा चमड़ा का व्यापार होता था।

*3. धातु ज्ञान में वृद्धि :- उत्तर-वैदिक काल में आर्यों को नयी-नयी धातुओं की जानकारी हो गयी थी। ऋग्वैदिक काल में केवल सोना और अयस्क की ही जानकारी थी परन्तु इस काल के लोगों को शीशा, टीन की भी जानकारी थी।